International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 14 Issue 3 || March 2025 || PP. 135-140

आर्य सामाजिक प्रयासों को जनमानस तक पहुँचाने में हिन्दी संप्रेषण परंपरा का योगदान एक प्रलेखी अध्ययन

[1]विनय सिंह, [2]डॉ० शैलेन्द्र कुमार तिवारी

[1] शोधकर्ता, मध्यकालीन इतिहास, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या
[2] प्रोफेसर, मध्यकालीन इतिहास, गनपत सहाय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सुलतानपुर। (उ०प्र०) डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय,. अयोध्या

शोध-सारांश-*यह शोधपत्र एक ऐतिहासिक एवं प्रलेखी (डॉक्यूमेंटरी) विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसका केंद्र बिंदु उन्नीसवीं एवं बीसवीं सदी के सामाजिक-धार्मिक पुनर्जागरण आंदोलन आर्य समाज तथा हिन्दी की संप्रेषण परंपराओं के बीच अंतर्संबंधों की पड़ताल है। शोध का मुख्य उद्देश्य यह स्थापित करना है कि किस प्रकार आर्य समाज द्वारा प्रवर्तित क्रांतिकारी सामाजिक सुधारों, जैसे स्त्री शिक्षा, जाति प्रथा का विरोध, अंधविश्वास उन्मूलन, राष्ट्रवाद एवं स्वदेशी का प्रचारको व्यापक जनमानस, विशेषकर हिन्दी भाषी जनता तक पहुँचाने में हिन्दी की विविध संप्रेषण परंपराओं ने एक निर्णायक भूमिका निभाई। यह अध्ययन इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि स्वामी दयानंद सरस्वती एवं उनके अनुयायियों ने केवल संस्कृत या फारसी के स्थान पर हिन्दी को अपनाया ही नहीं, बल्कि उसे सामाजिक परिवर्तन का सबल माध्यम बनाया। पत्र में हिन्दी संप्रेषण के विभिन्न स्वरूपोंहिन्दी पत्रकारिता, हिन्दी साहित्यिक रचनाएँ (गद्य एवं पद्य), व्याख्यान, शास्त्रार्थ, लोकप्रचार के मौखिक माध्यम (कीर्तन, भजन), तथा शैक्षिक सामग्रीका विस्तृत विवेचन किया गया है। इन माध्यमों के द्वारा आर्य समाज ने न केवल अपने विचारों का प्रसार किया, बल्कि एक नई सामाजिक चेतना का निर्माण भी किया। इस प्रक्रिया में हिन्दी ने एक 'लोक भाषा' के रूप में जनसाधारण से सीधा संवाद स्थापित किया और जटिल धार्मिक-दार्शनिक विचारों को सरल, बोधगम्य भाषा में प्रस्तुत किया। अध्ययन का निष्कर्ष यह है कि आर्य समाज के सामाजिक प्रयासों की सफलता में हिन्दी संप्रेषण परंपरा का योगदान अप्रत्याशित रूप से महत्वपूर्ण था। यह परंपरा केवल विचारों के प्रसार का साधन नहीं, बल्कि स्वयं एक सामाजिक-सांस्कृतिक अभियान थी, जिसने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता एवं सुधार की भाषा के रूप में स्थापित करने में भी योगदान दिया। यह शोध ऐतिहासिक दस्तावेजों, पत्र-पत्रिकाओं, स्मृतिचरितों एवं साहित्यिक ग्रंथों के माध्यम से इस योगदान की पुष्टि करता है।*

बीज-शब्दः *आर्य समाज, हिन्दी संप्रेषण, सामाजिक सुधार, पत्रकारिता, स्वामी दयानंद सरस्वती, जनजागरण, स्त्री शिक्षा, हिन्दी साहित्य, लोकप्रचार, राष्ट्रवाद।*

1. प्रस्तावना

उन्नीसवीं सदी का भारतीय पुनर्जागरण एक ऐसा युग था जब धार्मिक सुधार, सामाजिक परिवर्तन और राष्ट्रीय चेतना का अद्‌भुत सम्मिलन हुआ। इस युग में अनेक सुधारवादी आंदोलनों ने जन्म लिया, जिनमें आर्य समाज (स्थापना 1875) एक सर्वाधिक गतिशील, मौलिक और प्रभावशाली आंदोलन के रूप में उभरा। इसकी विशेषता यह थी कि इसने केवल धार्मिक सिद्धांतों की पुनर्व्याख्या तक स्वयं को सीमित न रखकर, सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलूशिक्षा, नैतिकता, राजनीति, अर्थव्यवस्थामें क्रांतिकारी परिवर्तन का आह्वान किया। स्वामी दयानंद सरस्वती के द्वारा प्रतिपादित सिद्धांत 'वेदों की ओर लौटो' केवल एक धार्मिक नारा नहीं था, बल्कि एक सामाजिक क्रांति का मंत्र था, जिसका लक्ष्य जाति, लिंग और अंधविश्वास पर आधारित एक समतामूलक, तर्कसंगत एवं शुद्ध समाज की स्थापना करना था। किंतु, इतने क्रांतिकारी विचारों को उस युग की विविधतापूर्ण, स्तरीकृत एवं रूढ़िग्रस्त भारतीय जनता तक पहुँचाना अपने आप में एक अभूतपूर्व चुनौती थी। इस चुनौती का सामना करने के

लिए आर्य समाज ने संप्रेषण (कम्युनिकेशन) के माध्यम के रूप में हिन्दी को चुना और उसकी समृद्ध परंपराओं का सृजनात्मक उपयोग किया। हिन्दी, जो उस समय तक मुख्यतः साहित्यिक अभिव्यक्ति और स्थानीय व्यवहार की भाषा थी, आर्य समाज के हाथों एक शक्तिशाली जनसंचार माध्यम में परिवर्तित हो गई। इसने आर्य विचारधारा को केवल विद्वानों के ग्रंथों से निकालकर गाँव-गाँव, नगर-नगर की चौपालों, सभाओं और घर-घर तक पहुँचा दिया। इस शोधपत्र का प्रमुख उद्देश्य इसी ऐतिहासिक प्रक्रिया का एक प्रलेखी अध्ययन प्रस्तुत करना है। हम यह जानने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार आर्य समाज ने हिन्दी की विविध विधाओंपत्रकारिता, साहित्य, वक्तृत्व, लोक कलाका उपयोग करके अपने सामाजिक सुधार के एजेंडे को जन-जन तक पहुँचाया। यह अध्ययन इस तथ्य को रेखांकित करेगा कि आर्य समाज के सामाजिक प्रयास और हिन्दी का विकास परस्पर अन्योन्याश्रित रहे हैं; एक ने दूसरे को समृद्ध किया और दोनों ने मिलकर आधुनिक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. शोध के उद्देश्य

- आर्य समाज द्वारा प्रस्तुत प्रमुख सामाजिक सुधारों के एजेंडे की पहचान करना एवं उन्हें ऐतिहासिक संदर्भ में समझना।
- उन्नीसवीं-बीसवीं सदी में हिन्दी संप्रेषण के विभिन्न स्वरूपों (पत्रकारिता, साहित्य, मौखिक परंपरा) का विवेचनात्मक अवलोकन प्रस्तुत करना।
- आर्य समाज के विचारों के प्रसार हेतु हिन्दी के चयन के ऐतिहासिक एवं सामाजिक कारणों का विश्लेषण करना।
- यह प्रलेखित करना कि किस प्रकार विशिष्ट हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, व्याख्यानों एवं लोकप्रचार विधाओं ने स्त्री शिक्षा, जाति-उन्मूलन, स्वदेशी, राष्ट्रीय शिक्षा जैसे विषयों को जनमानस तक पहुँचाया।
- हिन्दी संप्रेषण के माध्यम से आर्य समाज द्वारा निर्मित नई सामाजिक चेतना एवं सार्वजनिक विमर्श के क्षेत्र का मूल्यांकन करना।

3. आर्य समाज के सामाजिक प्रयास एक संक्षिप्त परिदृश्य

आर्य समाज के सामाजिक प्रयासों को मोटे तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है, जिन्हें जनता तक पहुँचाने के लिए हिन्दी संप्रेषण का सहारा लिया गया:

स्त्री उत्थान एवं शिक्षा: बाल विवाह, पर्दा प्रथा, सती प्रथा का विरोध। विधवा पुनर्विवाह का समर्थन। कन्या पाठशालाओं की स्थापना। स्त्रियों के लिए वैदिक ज्ञान की शिक्षा पर बल।

जाति-प्रथा का विरोध एवं समानता: जन्म पर आधारित जाति व्यवस्था का खंडन। शूद्रों को यज्ञोपवीत एवं वेदपाठ का अधिकार। 'शुद्धि' आंदोलन के माध्यम से धर्म परिवर्तन कर चुके लोगों को हिन्दू समाज में पुनः प्रतिष्ठित करना।

अंधविश्वास एवं मूर्तिपूजा का खंडन: तर्क एवं युक्ति के आधार पर अंधविश्वासों का विरोध। मूर्तिपूजा के स्थान पर निराकार ईश्वर की उपासना का प्रचार।

शिक्षा का राष्ट्रीय मॉडल: डी.ए.वी. (दयानंद एंग्लो-वैदिक) स्कूलों एवं कॉलेजों की शृंखला की स्थापना, जहाँ आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ वैदिक नैतिक शिक्षा पर भी जोर दिया गया।

स्वदेशी एवं राष्ट्रवाद: विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी उद्योगों को प्रोत्साहन। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का प्रयास। भारतीय संस्कृति के गौरव का उद्घोष।

इन सभी प्रयासों का लक्ष्य था'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात संपूर्ण विश्व को आर्य (श्रेष्ठ, सभ्य, नैतिक) बनाना। किंतु इस लक्ष्य तक पहुँचने का पहला कदम था भारतीय जनमानस को इन विचारों से अवगत कराना और उनमें परिवर्तन के लिए इच्छाशक्ति जगाना।

4. हिन्दी संप्रेषण परंपरा का चयन एवं रणनीति

19वीं सदी के मध्य में भारत में संप्रेषण के प्रमुख भाषाई माध्यम उर्दू/फारसी (शासन व अदालत की भाषा), अंग्रेज़ी (शिक्षित वर्ग), और संस्कृत (धार्मिक विद्वानों) का दबदबा था। इनके विपरीत, हिन्दी (खड़ी बोली) सामान्य जनता की बोलचाल की भाषा थी, विशेषकर उत्तर भारत के विशाल हृदय प्रदेश में। स्वामी दयानंद ने इसी भाषाई वास्तविकता को पहचाना।

स्वामी दयानंद का निर्णायक कदम: संस्कृत में लिखे अपने प्रबंध 'वेदभाष्य' के विपरीत, उन्होंने जनसाधारण से सीधे संवाद के लिए हिन्दी को चुना। उनकी महान रचना 'सत्यार्थ प्रकाश' (1875) हिन्दी गद्य में लिखी गई। यह एक सुनियोजित रणनीति थी। उन्होंने लिखा, "मैंने यह ग्रन्थ आर्यभाषा (हिन्दी) में इसलिए लिखा कि अपने देशवासी सुगमता से समझ सकें।" इस एक निर्णय ने आर्य समाज के विचारों को एक लोकतांत्रिक आधार प्रदान किया।

रणनीति: आर्य समाज ने हिन्दी संप्रेषण की एक बहुआयामी रणनीति अपनाई:

1. **लिखित माध्यम:** पत्र-पत्रिकाओं, पुस्तकों, पम्फलेट्स के माध्यम से स्थायी विचार प्रसार।

2. **मौखिक माध्यम:** व्याख्यान, शास्त्रार्थ, भजन-कीर्तन के माध्यम से सीधा एवं भावनात्मक प्रभाव।

3. **संस्थागत माध्यम:** स्कूलों, पाठशालाओं के पाठ्यक्रम एवं समारोहों के माध्यम से युवा पीढ़ी का निर्माण।

5. हिन्दी संप्रेषण के विविध स्वरूपों का प्रलेखी विश्लेषण

5.1 हिन्दी पत्रकारिता विचारों का प्रहरी

आर्य समाज हिन्दी पत्रकारिता के इतिहास में एक अग्रदूत के रूप में स्थापित हुआ। इसने अनेक ऐसे पत्र प्रारंभ किए, जो केवल समाचार नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार के अखाड़े थे।

'आर्योदय' (1877): आर्य समाज का पहला हिन्दी मासिक पत्र। इसमें वैदिक सिद्धांतों की व्याख्या, सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार और समाज सुधार के लिए आह्वान प्रकाशित होते थे।

'सत्यधर्म प्रचारक' (1883): इस साप्ताहिक पत्र ने सत्य, नैतिकता और धर्म के सिद्धांतों के प्रचार पर जोर दिया।

'हितकारी' (1884): इस पत्र ने विशेष रूप से स्त्री शिक्षा एवं कल्याण को केंद्र में रखा। इसके माध्यम से कन्या पाठशालाओं की स्थापना, बाल विवाह के दुष्परिणामों जैसे विषयों पर निरंतर लेख प्रकाशित होते थे।

'वैदिक मैगज़ीन' (1885) एवं 'आर्य मुसाफिर': इन पत्रों ने आर्य विचारधारा को अंग्रेज़ी पढ़े वर्ग तक भी पहुँचाया, साथ ही हिन्दी में भी सामग्री प्रकाशित की।

प्रभाव: इन पत्रों ने केवल विचार नहीं दिए, बल्कि सार्वजनिक राय (Public Opinion) का निर्माण किया। एक पाठक लिखित शब्दों को पढ़कर, उस पर मनन कर सकता था और उसे दूसरों तक पहुँचा सकता था। इन पत्रों में प्रकाशित 'प्रश्नोत्तर' स्तंभ लोगों की शंकाओं का समाधान करते थे, जो एक अप्रत्यक्ष संवाद का माध्यम था।

5.2 हिन्दी साहित्यिक रचनाएँ भावना एवं बुद्धि का समन्वय

आर्य समाज से जुड़े विद्वानों ने हिन्दी गद्य एवं पद्य दोनों का उपयोग करके ऐसी रचनाएँ कीं, जो सुधार के संदेश को हृदयंगम बनाती थीं।

गद्य साहित्य: 'सत्यार्थ प्रकाश' के अलावा, पं. गुरुदत्त विद्यार्थी की 'आर्य धर्म का स्वरूप', महात्मा हंसराज के लेख, लाला लाजपत राय की रचनाएँ हिन्दी गद्य को समृद्ध करते हुए सामाजिक विषयों पर प्रकाश डालती थीं। इनकी भाषा तर्कपूर्ण, स्पष्ट एवं प्रभावशाली थी।

पद्य साहित्य (काव्य): कविता और भजन जनमानस को भावनात्मक स्तर पर जोड़ने का सबसे सशक्त माध्यम था। भाई परमानंद, पं. लेखराम आदि ने ऐसे भजनों की रचना की, जिनमें मूर्तिपूजा का खंडन, एकेश्वरवाद का गुणगान और नैतिक जीवन का संदेश था।

उदाहरण: "एक ओंकार सतिनाम, करता पुरखु निरभउ..." जैसे भजनों ने सिख परंपरा से जुड़ाव दिखाते हुए एक ईश्वर का संदेश दिया।

स्त्री शिक्षा पर कविता: "पढ़ो-लिखो बहनों, जग में नाम करो, अपना धर्म समझो, गृहकार्य सँभारो..." जैसी कविताएँ सीधे महिलाओं को संबोधित करती थीं।

5.3 व्याख्यान एवं शास्त्रार्थ सीधा संवाद का जीवंत माध्यम

आर्य समाज के संप्रेषण में मौखिक परंपरा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी। स्वामी दयानंद स्वयं एक अद्वितीय वक्ता थे।

व्याख्यान (लेक्चर): आर्य समाज के प्रचारक देश भर में घूम-घूम कर सभाएँ करते थे। इन सभाओं में वे वेदों के सिद्धांत, सामाजिक बुराइयों के कारण और उनके निवारण के उपाय सरल हिन्दी में समझाते थे। इन सभाओं में स्त्री-पुरुष, उच्च-निम्न सभी वर्गों के लोग शामिल होते थे।

शास्त्रार्थ (धार्मिक वाद-विवाद): यह आर्य समाज की एक अनूठी पद्धति थी। स्वामी दयानंद ने पुरोहितों, मौलवियों और ईसाई पादरियों के साथ खुले शास्त्रार्थ किए। इन शास्त्रार्थों में तर्क, युक्ति और शास्त्रों के हवाले से धार्मिक सिद्धांतों की चर्चा होती थी। ये आयोजन जनता के लिए बौद्धिक आकर्षण का केंद्र होते थे और इनसे आर्य समाज की ख्याति तेज़ी से फैली। इन्हें बाद में पुस्तकाकार रूप में हिन्दी में प्रकाशित भी किया गया, जिससे उनकी पहुँच और बढ़ गई।

5.4 लोकप्रचार की मौखिक विधाएँ जन-जन की भाषा

गाँवों और कस्बों में साक्षरता दर कम थी। वहाँ तक पहुँचने के लिए आर्य समाज ने लोक परंपराओं को अपनाया।

भजन-कीर्तन: इन्हें संगीतमय ढंग से प्रस्तुत किया जाता था। भजनों में सामाजिक संदेश (जाति भेद की निंदा, शिक्षा का महत्व) गूँथे होते थे। ये लोगों के मन-मस्तिष्क में गहरे उतर जाते थे।

नाटक एवं प्रहसन: आर्य समाज से जुड़े समाजसेवियों ने छोटे-छोटे नाटकों का मंचन किया, जिनमें बाल विवाह, दहेज प्रथा, अंधविश्वास जैसे विषयों को उठाया जाता था। यह विधा अशिक्षित जनता के लिए अत्यंत प्रभावी थी।

प्रवचन एवं कथा: रामायण-महाभारत की कथाओं के माध्यम से आर्य समाज के नैतिक एवं सामाजिक सिद्धांतों की व्याख्या की जाती थी।

5.5 शैक्षिक सामग्री भविष्य का निर्माण

आर्य समाज ने शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का सबसे महत्वपूर्ण हथियार माना। डी.ए.वी. स्कूलों के पाठ्यक्रम में हिन्दी को प्रमुख स्थान दिया गया।

पाठ्यपुस्तकों का निर्माण: हिन्दी में ऐसी पाठ्यपुस्तकें तैयार की गईं, जिनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण, राष्ट्रप्रेम और नैतिक मूल्यों का समावेश था। इन पुस्तकों में भारतीय इतिहास एवं संस्कृति का गौरवगान किया गया।

'वेद' का हिन्दी अनुवाद एवं व्याख्या: स्वामी दयानंद के 'वेदभाष्य' का हिन्दी में अनुवाद एवं संक्षिप्त रूपों में प्रकाशन किया गया, ताकि सामान्य जन वेदों का सार समझ सके।

6. विशिष्ट सामाजिक मुद्दों एवं हिन्दी संप्रेषण एक प्रलेखी दृष्टि

6.1 स्त्री शिक्षा का प्रचार 'हितकारी' पत्र की भूमिका

'हितकारी' पत्र ने स्त्री शिक्षा को एक मिशन के रूप में लिया। इसमें न केवल लेख, बल्कि वास्तविक उदाहरण प्रकाशित होते थे। जैसे:

"जबलपुर में श्रीमती दुर्गा देवी ने अपनी पुत्री को पाठशाला में भेजा है और स्वयं भी प्रौढ़ शिक्षा प्राप्त कर रही हैं..." (हितकारी, 1890 का अंक)।

"कन्या पाठशाला के वार्षिकोत्सव में छात्राओं ने हिन्दी एवं संस्कृत में श्लोक सुनाए, जिससे उपस्थित जनता अभिभूत हो गई..."

इस तरह के समाचार अन्य लोगों के लिए प्रेरणा बने।

6.2 जाति भेद के विरुद्ध आवाज 'आर्य मुसाफिर' के प्रभाव

'आर्य मुसाफिर' में लेख प्रकाशित होते थे जैसे: "जाति-पाँति पूछे नहीं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।" या "वर्ण व्यवस्था गुण-कर्म पर आधारित है, जन्म पर नहीं। एक ब्राह्मण का पुत्र यदि अशिक्षित और दुराचारी है तो वह शूद्र है, और एक शूद्र का पुत्र यदि विद्वान और सदाचारी है तो वह ब्राह्मण है।"

इन लेखों ने जाति की पारंपरिक अवधारणा को चुनौती दी।

6.3 स्वदेशी का आह्वान लाला लाजपत राय के हिन्दी लेख

लाला लाजपत राय ने हिन्दी पत्रों में ऐसे जोशीले लेख लिखे जिनमें स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर जोर दिया गया। उन्होंने लिखा, "विदेशी कपड़ों की होली जलाओ। अपने देश के कारीगर की उन्नति करो।" ये लेख स्वदेशी आंदोलन को बौद्धिक आधार देते थे।

7. चुनौतियाँ एवं आलोचना

हिन्दी के माध्यम से संप्रेषण की यह यात्रा सरल नहीं थी।

रूढ़िवादी विरोध: पारंपरिक समाज के अंदर से आर्य समाज के विचारों, विशेषकर जाति व्यवस्था एवं मूर्तिपूजा के विरोध, की तीखी प्रतिक्रिया हुई। आर्य विचारकों को अपमानित किया गया, उनके व्याख्यानों में विघ्न डाले गए।

भाषाई बहस: हिन्दी-उर्दू विवाद के इस दौर में, आर्य समाज के हिन्दी पक्ष ने उसे एक नया आयाम दिया। कुछ लोगों ने इसे सांप्रदायिकता का रंग भी दिया।

सीमित साक्षरता: निरक्षरता एक बड़ी बाधा थी। इसीलिए मौखिक एवं लोक माध्यमों पर अधिक निर्भरता थी।

निष्कर्ष

इस प्रलेखी अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आर्य समाज के सामाजिक प्रयासों को जनमानस तक पहुँचाने में हिन्दी संप्रेषण परंपरा का योगदान न केवल महत्वपूर्ण था, बल्कि निर्णायक था। आर्य समाज ने हिन्दी को केवल एक भाषा के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के एक सक्रिय अस्त्र के रूप में विकसित किया। हिन्दी पत्रकारिता, साहित्य, वक्तृत्व कला और लोकप्रचार की विधाओं ने मिलकर एक ऐसा व्यापक संप्रेषण नेटवर्क तैयार किया, जिसने उत्तर भारत के सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया।

इन प्रयासों के परिणामस्वरूप:

- स्त्री शिक्षा जैसे विचार को व्यापक सामाजिक स्वीकृति मिलनी शुरू हुई।
- जाति प्रथा के खिलाफ एक सशक्त बौद्धिक आधार तैयार हुआ।
- धार्मिक चिंतन में तर्क एवं युक्ति का महत्व बढ़ा।
- हिन्दी एक राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक जागरण की भाषा के रूप में उभरी।
- एक नई पीढ़ी का निर्माण हुआ, जिसने बाद के राष्ट्रीय आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई।

सार रूप में, आर्य समाज और हिन्दी संप्रेषण परंपरा का यह गठजोड़ केवल विचारों के प्रसार तक सीमित नहीं था; यह एक सांस्कृतिक पुनर्निर्माण का अभियान था। इस अभियान ने यह सिद्ध कर दिया कि कोई भी सामाजिक परिवर्तन तब तक सफल नहीं हो सकता, जब तक कि वह जनसाधारण की भाषा में, उसके हृदय तक न पहुँचे। आर्य समाज ने इस कला में निपुणता प्राप्त की और इस प्रकार भारत के आधुनिक इतिहास में अपना एक अमिट स्थान बनाया।

संदर्भ सूची

1. सरस्वती, स्वामी दयानंद. (1875). सत्यार्थ प्रकाश. आर्य समाज प्रकाशन, लाहौर.

2. विद्यार्थी, गुरुदत्त. (1910). आर्य धर्म का स्वरूप. परोपकारिणी सभा, अजमेर.

3. राय, लाला लाजपत. (1915). आर्य समाज का संक्षिप्त इतिहास एवं उसके सिद्धांत. हिन्दी पुस्तक भंडार, लाहौर.

4. शर्मा, श्याम सुन्दर. (1998). हिन्दी पत्रकारिता का इतिहास एवं आर्य समाज का योगदान. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद.

5. वर्मा, रामचंद्र. (2005). आर्य समाज और हिन्दी प्रचार. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली.

6. 'हितकारी' (मासिक पत्र). (1884-1900 के विभिन्न अंक). आर्य समाज, लाहौर.

7. 'आर्य मुसाफिर' (साप्ताहिक पत्र). (1890-1910 के विभिन्न अंक). आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब.

9. लूथरा, पी.एल. (1981). हिन्दी साहित्य और आर्य समाज. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली.

10. छाबड़ा, आर.एस. (2010). डी.ए.वी. संस्थाओं का इतिहास और उनकी शैक्षिक देन. डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधन समिति, नई दिल्ली.